गांधी-मार्ग

*

मार्च-अप्रैल 2021

जनावरपुरा

मूल लेखक : जॉर्ज ऑर्वेल

रूपांतर : प्रेरणा

1. जनावरपुरा 5-64

आवरण : 'एनिमल फार्म' को अपनी कलम से लिखा जॉर्ज ऑर्वेल ने लेकिन दुनिया भर के कलाकारों-रंगकर्मियों व सिनेमा के लोगों ने इसे अपनी-अपनी तरह आंका है। किसी एक उपन्यास के पात्रों को ले कर इतना रेखांकन व एनिमेशन शायद ही हुआ होगा जितना 'एनिमल फार्म' को लेकर किया गया है। 1945 से ले कर अब तक इसके 100 से ज्यादा आवरण बने हैं। हमारे इस अंक में आवरण से ले कर भीतर के पन्नों तक पर आप जो भी चित्र देख रहे हैं, वे सभी इसी वैश्विक खजाने से निकाले गए हैं। हमारे आवरण का चित्र कलाकार डिट्रूज ने 2020 में बनाया था। उसने लिखा : "तानाशाही की क्रूर विकरालता और जनता की असहायता का चित्रण किया है मैंने।"

वार्षिक शुल्क : भारत में 200 रुपये, दो वर्ष के 350 रुपये, आजीवन-1000 रुपये (व्यक्तिगत), 2000 रुपये (संस्थागत), एक प्रति का मूल्य 20 रुपये, डाक खर्च निःशुल्क। दो माह तक न मिलने पर शिकायत लिखें। शुल्क चेक, बैंक ड्राफ्ट, मनीऑर्डर द्वारा 'गांधी पीस फाउंडेशन' के नाम भेजें।

संपादन : कुमार प्रशांत **प्रबंध :** मनोज कुमार झा **प्रसार :** भगवान सिंह

गांधी शांति प्रतिष्ठान, 223 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 के लिए अशोक कुमार द्वारा प्रकाशित

फोन : 011-2323 7491, 2323 7493, फैक्स : 011-2323 6734

Email: gmhindi@gmail.com

मुद्रक : नीता प्रेस, 3574- गली जटवारा, नीयर सबलोक क्लीनिक, दरियागंज, दिल्ली-110002, फोन नं. 8800646548

गांधी-मार्ग

अहिंसा-संस्कृति का द्वैमासिक
वर्ष 63, अंक 2, मार्च-अप्रैल 2021

गांधी शांति प्रतिष्ठान

शुरू में...

इतिहास जिन रास्तों से निकलता-चलता-बढ़ता है, उन रास्तों को देखना-पहचानना और संसार को उससे परिचित कराना एक जरूरी ऐतिहासिक दायित्व है लेकिन है यह बड़ा बारीक काम। जो इस बारीकी को नहीं पहचाते हैं, वे राजनीति की गलियों में ढोल बजाते रह जाते हैं; जो इसकी बारीकियों को समझ व समझा पाते हैं वे जॉर्ज ऑर्वेल(1903-1950) बन जाते हैं; और लिख जाते हैं 'एनिमल फार्म'(1945) और '1984' (1949)। इन दोनों किताबों ने मानव समाज की जितनी सेवा की है वैसी बहुत कम किताबों ने की है। ये दोनों किताबें अमर हो गई हैं।

1917 में हुई रूसी क्रांति ने भी मानव समाज की इतनी सेवा की है कि उसकी गाथा भी अमर हो गई है। विनोबा ने जिन्हें 'महामुनि' कहा उन कार्ल मार्क्स के चिंतन और जयप्रकाश ने जिन्हें 'महानायक' कहा उन व्लादिमीर इलिच लेनिन के अपूर्व नेतृत्व से स्वेच्छाचारी जारशाही का अंत हुआ और 1922 में सोवियत संघ अस्तित्व में आया। 1917 के बाद दुनिया की सोच और सामाजिक विमर्श की भाषा इस कदर बदली कि जैसी पहले कभी बदली नहीं थी। लेकिन यह स्वर्णिम आसमान जल्दी ही अपनी चमक खोने लगा। रोज़ा लक्ज़मबर्ग(1871-1919), लियोन ट्रॉट्स्की (1879-1940) जैसों ने चमक खोती क्रांति की इस पीड़ा को देखा और दुनिया को आगाह भी किया। ट्रॉट्स्की ने पतनशील मजदूर क्रांति के खिलाफ लेनिन को आगाह किया और स्टालिन का तो सीधा मुकाबला ही किया था। स्टालिन ने सत्ता पाते ही ट्राट्स्की को देशनिकाला दे दिया और अंततः भाड़े का हत्यारा भेज कर, मेक्सिको में उनकी हत्या करवा दी। आपसी खूनी खेल में यह अपूर्व क्रांति तब जो फंसी तो आज तक इससे उबर नहीं सकी है।

साम्यवाद और साम्यवादी क्रांति से जयप्रकाश का मोहभंग भी इसी दौर में हुआ और जॉर्ज ऑर्वेल का भी। जयप्रकाश ने बड़ी लंबी व रोमांचक विचार-यात्रा की और फिर 'अच्छाई की प्रेरणा' शीर्षक से वह ऐतिहासिक निबंध लिखा जिसने दुनिया के वामपंथी खेमे में

गहरी हलचल मचाई, तो गांधी-विचार को भी समृद्ध किया।

जॉर्ज ऑर्वेल ने भी विचारों की लंबी यात्रा की। 1922 से 1927 तक वे इंडियन इंपीरियल पुलिस में अधिकारी बनकर बर्मा के मोर्चे पर रहे। 1936-37 में स्पेन युद्ध में वे बजाप्ता फौजी बनकर लड़े और तब एक गोली इनका गला चीरती हुई निकल गई थी। इससे फौजी जीवन समाप्त हुआ। घायल ऑर्वेल अब एक नई लड़ाई में कूद पड़े– विचारों की लड़ाई! उन्होंने ट्रॉट्स्की की धारा को समर्थन दिया। यह रूसी क्रांति का स्टालिन-युग था। यदि ऑर्वेल स्पेन से निकल भागने और इंग्लैंड पहुंचने में सफल न हुए होते तो उनकी जान पर ही बन आई थी। इंग्लैंड में कुछ समय वे बीबीसी में रहे, कुछ समय पत्रकारिता-संपादन किया। और फिर उनकी पहली किताब आई– 'एनिमल फार्म'। यह वह कथानक था जिसे अद्‌भुत बारीकी से ऑर्वेल ने बुना था ताकि वे संसार को बता सकें कि पुराने मन से नया संसार न बनाया जा सकता है, न टिकाया जा सकता है। ऑर्वेल कल्पना करते हैं कि जानवरों का एक बाड़ा है जो अपने मनुष्य मालिक से बेजार होकर बगावत करता है और मनुष्य की गुलामी से छुटकारा पा जाता है। अब अपने मन की दुनिया रचने के लिए सारा आसमान उनके सामने खुला है। उनके गुरु मेजर ने क्रांति का सपना तो बुन ही दिया था, अब भरना था उसमें रंग। वह भरा भी गया लेकिन सारे रंग बदरंग होते गए और उनका 'एनिमल फार्म' एक शोकांतिका बन कर रह गया। ऑर्वेल ने इस उपन्यास में अपने आदर्श ट्रॉट्स्की को भी शामिल किया और उन्हें नाम दिया 'स्नोबॉल', जिसकी कथा आप आगे के पन्नों पर 'गोलू' के नाम से पढ़ेंगे।

'एनिमल फार्म' और '1984'– दोनों किताबों की संयुक्त बिक्री आज तक इतनी हुई है जितनी 20वीं शताब्दी के किसी भी एक लेखक की दो किताबों की नहीं हुई है। 2008 में मशहूर अखबार 'द टाइम्स' ने 1945 से 2008 के बीच के सबसे बेहतरीन अंग्रेज लेखकों की सूची में ऑर्वेल को दूसरे स्थान पर रखा था।

०००

'गांधी-मार्ग' का यह पूरा अंक उसी 'एनिमल फार्म' को लेकर आपके पास आया है। इसलिए नहीं कि यह किसी बेहतरीन लेखक की बेहतरीन कृति है। इसलिए कि 'एनिमल फार्म' दुनिया भर के परिवर्तनवादियों की पाठ्य-पुस्तक का दर्जा हासिल कर चुका है। इतना ही नहीं, यह गांधी को समझने में हमारी मदद करता है। गांधी बार-बार एक ही बात हमें समझाते रहे कि साध्य कितना भी अच्छा हो, अहम यह है कि तुम्हारा साधन भी उतना ही अच्छा हो। काले साधनों की काली छाया चमकीली उपलब्धि को भी काला कर देती है। 'हिंद-स्वराज्य' (1909) में वे अपने पाठक पर तंज कसते हुए कहते हैं कि आपको शेर तो चाहिए, शेर का स्वभाव नहीं चाहिए। वे पूछते हैं : शेर के स्वभाव के बिना शेर होता है क्या?

सारे संसार में, सारे प्रचलित वादों-पद्धत्तियों के पास सत्ता का एक ही मॉडल है। क्रांतिकारी जब पुरानी व्यवस्था तोड़ कर अपने सपनों की नई दुनिया बनाने चलता है तब

उसके पास भी ईंट-गारा तो वही होता है जो उसे विरासत में मिला है। इसलिए विनायक बनाना चाहता है, बनता है बंदर! गांधी जोर देकर कहते हैं कि मनःस्थिति बदलो, परिस्थिति खुद ही बदल जाएगी। आज का समाजशास्त्री जिसे 'पैराडाइम शिफ्ट' कहता है, गांधी उसे पुराने केंचुल से निकलना कहते हैं। हमारा अपना देश इसका एक उपयुक्त उदाहरण है। आजादी की लड़ाई की अपूर्व रणनीति और रचनात्मक कार्यक्रमों का अकल्पनीय तंत्र गांधी ने इस तरह खड़ा किया था कि दुनिया को लगने लगा था कि भारत से, पूरब से ही कोई नया संदेश, कोई नया रास्ता मिलेगा। लेकिन मिलीं तीन गोलियां जिसने गांधी व्यक्ति को ही नहीं मारा, संभावनाओं का पूरा संसार ही बिखेर दिया।

30 जनवरी 1948 के बाद जिन्हें रचना था उन संभावनाओं के आधार पर नया भारत, उन सबके पास मॉडल तो वही था जो अंग्रेज छोड़ कर गए थे। इसलिए बदले लोग और उनकी चमड़ी का रंग। गांधी छूटे तो छूटते ही चले गए।

ऐसा ही तब भी हुआ जब रूस में साम्यवादी क्रांति के बाद साम्य पर आधारित समाज बनाने की चुनौती आई। लेनिन ने कुछ हाथ-पैर मारा जरूर लेकिन स्थितियां हाथ से निकलती गईं और अंततः पूंजीवादी प्रतिमानों से समता की क्रांति दम तोड़ गई।

ऑर्वेल के **जनावरपुरा** में भी ऐसा ही हुआ।

क्रांति की हर नई कोशिश के साथ ऐसा ही हो सकता है।

गांधी ने हमारे लिए विरासत छोड़ी है : क्रांति के प्रति सतत जागरूकता और अपने प्रति गहरी, कठोर ईमानदारी!

०००

'एनिमल फार्म' का हिंदी अनुवाद पहले भी हो चुका है। लेकिन आज जरूरी यह था कि ऑर्वेल के 'एनिमल फार्म' को 'जनावरपुरा' बनाया जाए। ऑर्वेल भारतीय होते तो जो करते वह काम **प्रेरणाजी** ने अपूर्व कुशलता से किया है। यह भाषांतर नहीं है, रूपांतर है। पाठकों को याद होगा, हम **प्रेरणाजी** की यह प्रतिभा जेम्स डगलस की 'अनस्पिकेबल' की प्रस्तुति में देख चुके हैं। **प्रेरणाजी** स्वयं गांधी-विचार से प्रतिबद्ध ही नहीं हैं, गांधी की दिशा समझने व उसे युवा-मन तक पहुंचाने की कोशिश में सतत लगी रहती हैं। वे आधुनिक अर्थशास्त्र में दखल रखती हैं और गांधी को उस पर भी आजमाती रहती हैं।

०००

अब 'जनावरपुरा' आपके हाथ में सौंप कर हम विदा लेते हैं। आप इसे पढ़ें और ऑर्वेल साहब से दोस्ती ताजा करें। फिर हमें अपनी राय भी लिखें।

हमारा यह भी आग्रह है कि हमारा हर पाठक **गांधी-मार्ग** के इस अंक को कम-से-कम 25 नये पाठकों तक पहुंचाए। यह गांधी के नमक का कर्ज उतारना है।

० कु.प्र.

जनावरपुरा

एनिमल फार्म एक क्लासिक है; साम्यवाद पर एक ऐतिहासिक टिप्पणी है। आज साम्यवाद दुनिया के कुल पांच देशों में बच गया है और जहां बचा है वहां भी वह दूसरा कुछ भी हो, साम्यवादी तो नहीं है। फिर यह किताब प्रासंगिक क्यों है? आज का नौजवान भले साम्यवाद की परिकल्पना से अनभिज्ञ है लेकिन उसे भी यह साफ दिखता है कि हर कहीं एक 'राजा' है जो किसी 'मुंगेरीलाल' और 'गोलू' का डर दिखा कर पूरे 'जनावरपुरा' को अपने काबू में रखता है। जब भी 'राजा' का कोई बड़ा घपला सामने आता है, जनावरपुरा में भी युद्ध हो जाता है ताकि भोले जानवरों का ध्यान भटक जाए और दुश्मन के डर से सब 'राजा' के काबू में रहें। उनकी तकलीफों को किसी बड़े उद्देश्य के शोर के नीचे दबा दिया जाता है। आज 75 साल के बाद यह किताब साम्यवाद को ही नहीं, दुनिया भर की तानाशाहियों को समेट लेती है। जो तानाशाही की वृत्तियों को नहीं पहचान पाते वे अभिशप्त हो कर अपने 'जनावरपुरा' में बंद हो जाते हैं। इसी सच्चाई की वजह से इसका रूपांतर किए बिना मैं रह नहीं सकी।

—प्रेरणा

यह बात नरमादापुरा की है। मुंगेरीलाल आज खूब पी कर आया था। उसने अपने मुर्गी घर का फाटक तो बंद किया लेकिन उनमें बने छोटे दरवाजों को बंद करना भूल गया। छत पर टंगी लालटेन की रोशनी के साथ नाचता-लड़खड़ाता वह अपने कमरे में पहुंचा, इधर-उधर नजर घुमाई, जूते उतार फेंके और बोतल में बची आखिरी शराब गिलास में उड़ेल कर, डगमगाता हुआ अपने बिस्तर तक पहुंचा जहां उसकी पत्नी पहले से ही खर्राटे ले रही थी।